SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत के आंतरिक सुरक्षा में सामुदायिक पुलिसिंग का महत्व, छत्तीसगढ़ राज्य के माओवाद एवं नशा विरोधी अभियानों के विशेष संदर्भ में

गिरीश कांत पाण्डेय, Ph.D., प्राचार्य
शासकीय कोदूराम दलित महाविद्यालय, नवागढ़, जिला–बेमेतरा, छत्तीसगढ़, भारत
प्रवीण कुमार कड़वे, Ph.D., **तोरण सिंह ठाकुर,** सीनियर रिसर्चफेलो, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
गिरीश कांत पाण्डेय, Ph.D.
प्रवीण कुमार कड़वे, Ph.D.
तोरण सिंह ठाकुर, सीनियर रिसर्चफेलो
E-mail : gkpcg@rediffmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/11/2024
Revised on : 24/01/2025
Accepted on : 03/02/2025
Overall Similarity : 01% on 25/01/2025

शोध सार

विकसित राष्ट्र का लक्ष्य लेकर युवा भारत प्रगति पर है और युवा इसके प्रमुख ईंधन है। चूँकि भारत युवादेश है इस कारण नशे के अवैध कारोबार के लिये यह बड़ा बाजार है और इस नशे की लत से युवा भारत के विकास में कार्य न कर समाज व समुदाय के लिये हिंसात्मक एवं नकारात्मक खतरे बन जाते है एवं इस अवैध कारोबार से अर्जित धनों का उपयोग अतिवादी, आतंकवादी तथा भारत विरोधी संगठनों में होता है इसलिये भारत के नागरिकों में जागरूक होना आवश्यक है। सामुदायिक पुलिसिंग के द्वारा संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में जनता और पुलिस के मध्य विश्वास बढ़ाया जाता है तथा सभी क्षेत्रों में विभिन्न तरह के अभियानों से निवासियों तथा युवाओं को जागरूक करने का कार्य के साथ उन्हे बेहतर भविष्य के लिये मार्गदर्शन देते है। माओवाद के बाद भारत के मध्य क्षेत्रों में अवैध नशा करोबार आंतरिक सुरक्षा के लिये खतरा है। छत्तीसगढ़ जैसे युवा राज्य जो दशकों से माओवाद की समस्या से ग्रसित है, यहाँ सामुदायिक पुलिसिंग का महत्व बढ़ जाता है।

मुख्य शब्द

सामुदायिक पुलिसिंग, आंतरिक सुरक्षा, माओवाद, नशा विरोध, छत्तीसगढ़.

प्रस्तावना

भारत वर्तमान में विश्व की सबसे युवा जनसंख्यात्मक देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था चरम में है लेकिन भारत के बाह्य एवं आंतरिक विरोधी शक्तियों के लिये यह वातानुकुलित नहीं है, क्योंकि अवैध तस्करी, अनैतिक अर्जित धन विरोधी अभियान एवं स्वच्छ वातावरण से

इनके पूर्व में बनाये गये अवैध आर्थिक पारिस्थितिक तंत्र को आर्थिक जलवायु नहीं मिलती है। इस हेतु भारत के विरोधियों एवं अवैध आर्थिक पारिस्थितिकतंत्र के चिंतक साथियों का प्रथम कार्य भारतीय भविष्य के सकारात्मक निधि भारतीय युवाओं कों विभिन्न प्रकार के नशों में लिप्त कर उन्हें आर्थिक व सामाजिक रूप से इन्हें अपना ग्राहक बनाना होता है। भारत के विभिन्न सीमावर्ती क्षेत्रों में नशा एवं अतिवाद की समस्या प्रमुख विषय है लेकिन मध्य भारतीय क्षेत्र छत्तीसगढ़ के लिये यह समस्या माओवाद की समस्या जैसी घातक हो रही हैं। छत्तीसगढ़ छः राज्यों से जुड़ा है और पूर्व, पश्चिम, दक्षिण व उत्तर राज्यों के लिये आवागमन मार्ग है। तस्कर इन भौगोलिक क्षेत्रों का फायदा उठा अवैध तस्करी करते है और इन क्षेत्रों में मौजूद विभिन्न अतिवादी संगठनों को आर्थिक लाभ भी पहुंचा रहे है जो आंतरिक सुरक्षा के लिये खतरें है। इस तरह के आंतरिक सुरक्षा के खतरों के रोकथाम के लियें स्थानीय निवासियों का जागरूक होने के साथ वहाँ के सुरक्षातंत्रों पर भरोसा होना चाहियें। सामुदायिक पुलिसिंग जनता और पुलिस के मध्य विश्वास सेतु का कार्य करता है, क्योंकि कानून की सुरक्षा पुलिस करती है और स्वच्छ सामुदायिक वातावरण के लिये नागरिकों और स्थानीय पुलिस का संबंध मृदु होना चाहिये।

सामुदायिक पुलिसिंग का मूल सिद्धांत

एक पुलिसकर्मी वर्दी वाला नागरिक होता है और एक नागरिक बिना वर्दी वाला पुलिसकर्मी होता है। सामुदायिक पुलिसिंग का कार्य पुलिसकर्मियों और नागरिकों के बीच दूरी इस हद तक काम करना है कि पुलिसकर्मी उस समुदाय का एक एकीकृत हिस्सा बन जाये जिसकी वे सेवा करते है। यह पुलिस और जनता के बीच विश्वास बढ़ाने में मदद करता है क्योंकि सार्वजनिक व्यवस्था बनाये रखने तथा स्थानीय संघर्षो को हल करने हेतु उद्देश्य जीवन और सुरक्षा की भावना की बेहतर गुणवत्ता प्रदान करना है।[1]

सामुदायिक पुलिसिंग का इतिहास

19वीं सदी में सामुदायिक उन्मुख पुलिसिंग की उत्पत्ति का ज्ञान 1829 में लगाया जा सकता है, जब ब्रिटिश राजनेता रॉबर्ट पील (आधुनिक पुलिसिंग के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं) ने लोकतांत्रिक पुलिसिंग के सिद्धांत बताये थे। इन सिद्धांतों ने लोगों के निज जीवन में अनुचित हस्तक्षेप के बिना अपराध की रोकथाम की संभावना पेश की।

20वीं सदी में यह धारणा 1960 और 70 के दशक में युनाईटेड किंगडम, उत्तरी अमेरिका और नीदरलैंड में फिर से उभरी। समुदायों और पुलिस के बीच कथित अंतर के जवाब में एक अधिक समकालीन सामुदायिक पुलिसिंग उभरा, जहां कार गश्ती ने पैदल गश्ती की जगह ले ली जब पुलिस स्टेशन 24/7 खुले नहीं रहते थे। अपने शुरुआती दिनों में, सामुदायिक पुलिसिंग को पुलिसिंग के नौकरशाही स्वरूप से एक विराम के रूप में डिजाइन किया गया था, जो सीमित सार्वजनिक संपर्क, अपराध नियंत्रण, अनियत कार गश्त और जिम्मेदारी के एक समन्वित केंद्रीय और क्षेत्रीय संगठन पर केंद्रित था। नए सामुदायिक पुलिसिंग का उद्देश्य अपराध के डर, सामाजिक शारीरिक अव्यवस्था और पड़ोस की समस्याओं सहित व्यापक सुरक्षा मुद्दों को संबोधित करने के लिए पुलिस जनादेश को व्यापक बनाना और इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य अधिकारियों को प्राथमिकताओं की पहचान करने और समस्याओं को हल करने के लिए निवासियों के साथ सहयोग करने में सक्षम बनाना है।

21वीं सदी में 2001 में 9/11 के हमलों के बाद, पश्चिमी पुलिस एजेंसियों ने आतंकवाद से लड़ने की दिशा में प्राथमिकता में बदलाव देखा। सामुदायिक पुलिसिंग को फिर से शून्य सहिश्णुता और अपराध पर सख्त सिद्धांतों की विशेषता वाले पुलिसिंग और कानून प्रवर्तन दृष्टिकोण द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। इन दमनकारी और भारी–भरकम सुरक्षा दृष्टिकोणों को आतंकवाद और धार्मिक कट्टरपंथ से लड़ने में उनकी अप्रभाविकता के लिए आलोचना मिली, इसके विपरीत वहाँ के अल्पसंख्यक अधिकारों के उल्लंघन में वृद्धि हुई है और पुलिस में स्थानीय समुदायों के विश्वास को कम होता गया।

विश्वास निर्माण, व्यापक सुरक्षा चिंताओं और अपराध की रोकथाम पर अपना ध्यान केंद्रित करने के साथ, सामुदायिक पुलिसिंग अधिक दमनकारी पुलिसिंग के विकल्प के रूप में ध्यान आकर्षित कर रहा है, विशेष रूप से संघर्ष के बाद के क्षेत्रों में पुलिस सुधारों के लिए अंर्तराष्ट्रीय सहायता के हिस्से के रूप में।[2]

समुदायिक पुलिसिंग के लाभ[1]

- सरकारी वृत्त की आवश्कता नहीं।
- अपराध और अव्यवस्था के विरूद्ध प्रतिरक्षा में वृद्धि।
- लोगो के मध्य विश्वास कायम करना।
- सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित करने में मददगार।
- पुलिस और जनता दोनो मध्य प्रोत्साहन एवं आलोचना को साझा करना।
- लोगो के मध्य विश्वास कायम करना।
- अपने कार्य क्षेत्र के प्रति पुलिस अधिकारियों में सुरक्षा का भाव होना।
- विश्वसनीय और आवश्यक सूचनाओं की उपलब्धता।
- लोगो के मध्य जिम्मेदारी की भावना पैदा करना।
- पुलिस एवं जनता दोना की एक दूसरे के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करना।
- समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

माओवादी क्षेत्र में सामुदायिक पुलिसिंग की भूमिका

कबीरधाम जिला पुलिस द्वारा शुरू किये गये सामुदायिक पुलिसिंग से माओवादी बौखला गये है क्योंकि इस अभियान से पुलिस व ग्रामीणों के बीच दोस्ती का रिश्ता बन चुका है। यही कारण है कि माओवादियों का डर है कि उनके संगठन को नुकसान होगा। इस संबंध में कबीरधाम जिले में माओवादी प्रभावित थाना क्षेत्र अलमला जंगल के ग्राम समनापुर में माओवादियों ने पर्चा चस्पा किया है। यह पर्चा भोरमदेव एरिया कमेटी ने चस्पा किया है।

कमेटी ने क्षेत्र के युवाओं को सामुदायिक पुलिसिंग से दूर रहने कहा है। इस पर्चे में माओवादियों ने क्षेत्र के लोगो को मुखबिरी न करने को कहा है। हाल में ही पुलिस विभाग ने वनांचल क्षेत्र के लोगो को खेल से जोड़ने के लिये खेल समिति का गठन किया है। ज्यादतर खेल समिति माओवादी प्रभावित क्षेत्रों में खेल गतिविधियॉ संचालित कर रही है। पर्चे में खेल समिति के संबंध में भी बातें लिखी है। इस पर्चे में लिखा है कि खेल के माध्यम से मुखबिरी करायी जा रही है। इधर पर्चा मिलने के बाद कबीरधाम जिले में पर्चा के बाद पुलिस ने मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ सीमा क्षेत्र के सभी थानों को चेतावनी देने के साथ गश्त अभियान तेज किया है।

छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा संचालित क्रीड़ा मैदान

लंबे समय बाद भोरमदेव एरिया कमेटी की गतिवधियॉ दिखने लगी है। बीते कुछ वर्ष से इस संगठन का क्षेत्र में गतिविधि नहीं थी। अचानक से भोरमदेव एरिया कमेटी की गतिविधियाँ शुरू हो गयी है। हालांकि जिले स्थापना के शुरूवाती दिनों में नक्सल संगठन तैयार हो रहा था, तभी इस भोरमदेव एरिया कमेटी का गठन किये जाने की बात सामने आयी है। हालांकि इसके अलावा खटिया मोर्चा दलम, बोडला एरिया समेत अन्य नाम के भी माओवादियों ने कमेटी बना रखा है।

कबीरधाम पुलिस के सामुदायिक पुलिसिंग से पुरे प्रदेश में बेहतर काम किया है। इसके माध्यम से

जिले के युवाओं के साथ–साथ वनांचल व माओवादी प्रभावित गाँव के युवा विकास से जुड़े है। सामुदायिक पुलिसिंग अंर्तगत फोर्स अकादमी, खेल समिति, क्रिकेट प्रतियोगिता, कबड्डी प्रतियोगिता, ओपन स्कूल के फार्म, बच्चों के लिये निःशुल्क कोचिंग समेत अन्य प्रकार की सामुदायिक गतिविधि कबीरधाम पुलिस ने शुरू किया है। सामुदायिक पुलिसिंग अंतर्गत फोर्स अकादमी से निःशुल्क प्रशिक्षण बीते पॉच साल में करीब 500 से अधिक युवाओं की पुलिस, पैरामिलिट्री फोर्स, आर्मी समेत अन्य जगहों में सरकारी नौकरी हासिल किये है।[5]

रायपुर संतोषी नगर के बस्ती के बच्चों के लिये क्रीड़ा मैदान बनाया गया है। इस मैदान का उपयोग पहले शराब और अन्य तरह नशों के लिये किया जाता था जिससे वहाँ के स्थानीय छात्र–छात्राओं में नकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

नशे के नेटवर्क को ध्वस्त करने में भूमिका

नशे के तस्करी से न सिर्फ युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही बल्कि देश की सुरक्षा भी कमजोर होती है। तस्करी से अर्जित किया गया धन आतंकवाद, माओवाद और देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर करता है। इसके पीछे काम करने वाले रैकेट तक पहुंचने के लिये जनता का साथ एवं विश्वास बहुत आवश्यक है जिससे नशे की पुड़िया के साथ पकड़े गये पैडलर के जरिये पता चल सकता है कि यह कहॉ से आया है और इसक पीछे कौन से लोग कार्य कर रहे हैं। माओवाद की समस्या से छत्तीसगढ़ कई दशकों से ग्रसित है तथा नशे की तस्करी भी आंतरिक सुरक्षा के लिये खतरा है। इसके लिये सामुदायिक पुलिसिंग से युवाओं और छात्र छात्राओं में जागरूकता को लेकर चर्चा किया जाना चाहिये।

भारत के इस 2014–2024 दशक में 22000 करोड़ का ड्रग्स पकड़ाया गया है। देशभर में ड्रग्स के 4150 प्रकरण दर्ज किया गया है।[4]

2004 से 2024 तक ड्रग्स संबंधी कार्यवाही का विवरण[4]

क्रमांक	वर्ष	प्रकरण संख्या	गिरफ्तारी	ड्रग्स का मुल्य	पकड़ाया ड्रग्स किलोग्राम में
1.	2004–2014	1250	1360	5900 करोड़	1,52,000
2.	2014–2024	4150	6300	22000 करोड़	5,43,000

मध्यक्षेत्र में ड्रग्स की तस्करी[15]

ड्रग्स की तस्करी ओडिशा तथा आंध्रप्रदेश से छत्तीसगढ़ के रास्ते गांजे की तस्करी होती है। पिछले 3 साल में राज्य पुलिस और डीआआई द्वारा 10 करोड़ से ज्यादा का गांजा जब्त किया गया है।[4]

छत्तीसगढ़ में निजात अभियान

छत्तीसगढ़ राज्य में पुलिस द्वारा मादक पदार्थों के विरुद्ध सख्ती से कार्रवाई की जा रही है। निजात अभियान एक कार्रवाई व जागरुकता अभियान है, जिसमें अवैध नशे के सौदागरों पर सख्त कार्रवाई के साथ ही नशे के विरुद्ध जनजागरुकता और नशे के ग्रसित लोगों का पुनर्वास शामिल है। इस चर्चित अभियान की शुरूआत तत्कालीन एसपी कोरिया संतोष सिंह द्वारा की गई थी। इसके बाद राजनांदगांव और वर्तमान में कोरबा पुलिस सहित कई जिलों में यह अभियान चलाया जा रहा है। इसी वर्ष गृह मंत्रालय, भारत सरकार की संस्था पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (बीपीआरएंडडी) ने कोरिया पुलिस द्वारा शुरू किए गए निजात अभियान को देश के तीस सर्वोत्तम स्मार्ट–पुलिसिंग अभियानों में शामिल किया था।[6]

फरवरी 2024 में रायपुर पुलिस निजात अभियान के तहत नशे के खिलाफ लगातार कार्रवाई किया गया था। फरवरी महीने से अब तक इस अभियान के तहत आबकारी और एनडीपीएस मामलों में 1 हजार 754 आरोपियों को

गिरफ्तार किया गया था। इनमें से गैर जमानती मामलों में 370 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था।

एनडीपीएस व आबकारी की कार्यवाही में कुल 1736 प्रकरणों में 1754 व्यक्ति गिरफ्तार हुए जिसमें गैर–जमानतीय प्रकरणों में 370 आरोपी जेल गए थे। 3001 लीटर शराब, 410 किलो गांजा सहित अफीम, नशीली टेबलेट और सीरप आदि जब्त किया गया है। पुलिस की लगातार पेट्रोलिंग, प्रतिबंधात्मक कार्रवाई और नशे खिलाफ कार्यवाहियों के परिणामस्वरूप इस होली में पिछले कई सालों की तुलना में कम अपराध घटित हुए थे। पिछले साल रायपुर जिले में 18 चाकूबाजी (12 होलिका के दिन और 6 केस होली के दिन) और दो हत्यायें हुआ था। हाथपाई की कुल 84 प्रकरण दर्ज हुए थे। इस वर्ष होलिका के दिन एक चाकू से हत्या हुआ उसके बाद आरोपी को तुरंत गिरफ्तार किया गया और एक अन्य चाकूबाजी हुई तथा होली के दिन तीन चाकूबाजी की घटनाएं हुई थी।[7]

वर्ष 2023 में बिलासपुर पुलिस द्वारा नशे के तस्करों पर नकेल कसने के लिए शुरू किए गए निजात अभियान के बाद इस अभियान से सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। पिछले वर्षों तुलना में आईपीसी अपराधों में 12 प्रतिशत की कमी आई है। इस अभियान के दौरान एनडीपीएस और आबकारी के 2,454 मामलों (आबकारी मामलों में 2,442 आरोपी और एनडीपीएस मामलों में 137 आरोपी) में कुल 2,579 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इनमें से गैर जमानती अपराधों में शामिल 402 आरोपियों को जेल भेजा गया। कानून प्रवर्तन अधिकारियों ने 4,804 लीटर अवैध शराब, 640 किलोग्राम गांजा, 15 ग्राम चरस, 10,000 इंजेक्शन और अन्य नशीले पदार्थ जब्त किए थे। इसके अलावा, मारपीट के मामलों में 12 प्रतिशत, हत्या के प्रयास में 66 प्रतिशत, हत्या में 21 प्रतिशत, चाकू घोंपने की घटनाओं में 74 प्रतिशत, छेड़छाड़ के मामलों में 46 प्रतिशत और चोरी के मामलों में 21 प्रतिशत की कमी आई है। हालांकि, कुल पंजीकृत अपराधों में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और सड़क दुर्घटनाओं में 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिसका मुख्य कारण आबकारी और एनडीपीएस मामलों में वृद्धि है। इसके अलावा, शराब के नशे में वाहन चलाते पाए गए 825 व्यक्तियों पर 185 मोटर वाहन अधिनियम के तहत कानूनी कार्रवाई की गई। अभियान का प्रभाव एक शराब कोचियों के उदाहरणों में देखा जा सकता है जिसने गन्ने के रस की दुकान खोली और एक पूर्व नशे की लत में रहने वाली महिला ने चाय की दुकान शुरू की। इसके अतिरिक्त, पुर्नवासित क्षेत्रों और कई गांवों में कई परिवारों ने शराब पर प्रतिबंध लागू किया है।[8]

प्रचार

वर्तमान में कोरबा जिले में निजात अभियान के तहत पुलिस नशीले पदार्थों और अवैध शराब की तस्करी को प्रभावी ढंग से रोकने में सफल रही है। जिले के थानों में नशे के आदी ग्रसित लोगों की काउंसलिंग के साथ ही नशा–मुक्ति कक्ष भी निमार्णाधीन है। वहीं जन–जागरूकता कार्यक्रम से लोग नशे की लत छोड़कर सामान्य जीवन जीने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। अभियान के प्रचार–प्रसार के लिए जिले के सभी कस्बों और दूर–दराज के गांवों में बैठक, रैली, नुक्कड़ नाटक, वॉल राइटिंग, पोस्टर, बैनर आदि लगाकर लोगों को जागरुक किया जा रहा है। इस अभियान में समाज के सभी लोगों और वर्गों की सहभागिता हो रही है और व्यापक जन–समर्थन मिल रहा है।[6]

निजात अभियान का प्रचार

प्रमुख रूप से समान्यतः प्रचलित नशे

देश की अर्थव्यवस्था का भविष्य युवाओं पर निर्भर होता है क्योंकि वे हमारे विकास कार्य एवं अर्थव्यवस्था के नये ध्वज वाहक होते है लेकिन युवाओं को अवैध नशों का लत लगा उन्हे अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यो से अलग कर उन्हे आंतरिक सुरक्षा के लिये खतरे बना सकते है। इस अनैतिक कार्यो के लिये युवाओं में विभिन्न तरह

के नशों का लत अवैध रूप से विक्रय कर फैलाते है।

- **गांजा और भांग**: यह एक ही पौधे के उत्पाद है। ओखली और मूसली से इस पौधे की पत्तियों को पीसकर एक चूर्ण या लोई बनाई जाती है, जो भांग की तरह इस्तेमाल होती है जबकि मादा भांग के पौधे के फूलों के पास की पत्तियों और तने को सुखाकर इससे गांजा बनाया जाता है। गांजे को तंबाकू की तरह सेवन किया जाता है, यानी सिगरेट या चिलम में भरकर इस्तेमाल किया जाता है और नशे में गांजे का निसपंदन रूप चरस भी इसी पौधे की देन है। इन सभी में भांग ही केवल सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ में विक्रय किया जाता है जो प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रसादों में परंपरागत रूप से उपयोग में लिया जाता है।[9]
- **निट्रोसन 10 टैबलेट**: इसे आमतौर पर अन्य दवाओं के साथ इस्तेमाल किया जाता है। यह मस्तिष्क को आराम देता है और उन लोगों का इलाज करने में मदद करता है जिन्हें नींद से जुड़ी समस्याएं होती हैं।[10]
- **अल्प्राजोलम**: इसका उपयोग चिंता और घबराहट संबंधी विकारों के इलाज के लिए किया जाता है। यह बेंजोडायजेपाइन नामक दवाओं के एक वर्ग से संबंधित है जो मस्तिष्क और तंत्रिकाओं (केंद्रीय तंत्रिका तंत्र) पर कार्य करके शांत प्रभाव पैदा करता है। यह शरीर में एक निश्चित प्राकृतिक रसायन (गाबा) के प्रभाव को बढ़ाकर काम करता है।[11]
- **स्पास्मो–प्रॉक्सीवॉन प्लस कैप्सूल**: यह पेट और आंत (जीयूटी) में मांसपेशी ऐंठन या संकुचन का इलाज करने में मदद करता है, जिससे मांसपेशियों में आराम होता है और भोजन की गति में सुधार होता है। यह मस्तिष्क में उन केमिकल मैसेंजर को भी ब्लॉक करता है जो दर्द की अनुभूति के लिए जिम्मेदार होता है। यह पेट में दर्द (या स्टमक पेन) और मरोड़, पेट फूलना और असुविधा के इलाज में मदद करता है।[12]
- **एनएसडी सस्पेंशन**: यह दर्द निवारक औशधियों के एक वर्ग से संबंधित है जिसे नॉन–स्टेरॉयडल एंटी–इंफ्लेमेट्री स्टोन (एनएसएआईडी) कहा जाता है, जिसका उपयोग दर्द और डिसमेनोरिया (दर्दनाक मासिक धर्म या मासिक धर्म ऐंठन) के इलाज के लिए किया जाता है। इसके अलावा, इसका उपयोग दांतों के दर्द के इलाज के लिए भी किया जाता है, जो दांतों की तंत्रिका को नुकसान, संक्रमण, क्षय, निष्कर्षण या चोट का कारण बन सकता है। इसमें निमेसुलाइड होता है जो शरीर में दर्द और सूजन पैदा करने के लिए जिम्मेदार प्रोस्टाग्लैंडीन नामक रसायन के प्रभाव को अवरुद्ध करके काम करता है।[13]

शराब, भांग, अफीम और हेरोइन भारत में दुरुपयोग की जाने वाली प्रमुख दवाएं हैं। ब्यूप्रेनोर्फिन, प्रोपोक्सीफीन और हेरोइन सबसे अधिक इंजेक्शन वाली दवाएं हैं।[16]

छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा पकड़ा गया नशे की सामाग्रियॉ

बस्ती क्षेत्रों के निवासियों से चर्चा में इस तरह के नशे संबंधी गोलियों की जानकारी मिली, साथ में विभिन्न प्रकार के इंजेक्शन व अन्य नशों की सामाग्री बहुत महंगी होती है और सामान्यतः निम्न एवं मध्यमवर्गीय नशेड़ी इस तरह के महंगे नशे को क्रय नहीं कर सकते है, जो शराब से महंगे हो। कारण है, शराब की बढ़ती कीमते, इस तरह के अनुवाछिंक नशे जो शरीर के लिये भले ही अधिक नुकसानदायक हो, लेकिन उनके आय व्ययक के अंतर्गत उनके व्ययमित्रता में आ जाते है। महंगे नशों के अवैध कारोबार के लिये धनी युवक–युवतीयों को संपर्क में जोड़, उन्हे अवैध रूप से नशे का कारोबार करते है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ युवा राज्य है, माओवाद, अवैध नशे एवं तस्करी इत्यादि छत्तीसगढ़ की आंतरिक सुरक्षा के लिये खतरें का विषय है। इस चुनौतीपुर्ण खतरों से सुरक्षा के लिये आम जनता को सुरक्षाबल, पुलिस एवं शासकीय खुफियातंत्र पर भरोसा कर उनका साथ देना चाहिये क्योंकि जिस तरह भारतीय संविधान में भारतीय नागरिकों को मौलिक अधिकार प्राप्त है, उसी तरह मौलिक कर्तव्यों को ध्यान में रखकर भारतीय नागरिकों को भी देश की सुरक्षा में साथ देना चाहिये और विभिन्न तरह की स्थानीय समस्याओं एवं खतरों के निवारण में सुरक्षा तंत्रों को सहयोग प्रदान करना चाहिये। स्वच्छ सामुदायिक वातावरण के लिये विभिन्न तरह की अवैध नशों के प्रति जन जागरूक होना सभी भारतीय नागरिकों का मौलिक कर्तव्य है और समुदाय पुलिसिंग का मुख्य कार्य ही जनता और पुलिस प्रशासन के मध्य विश्वास का सेतू निर्माण करना हैं, क्योंकि भारत देश की रक्षा करना केवल सुरक्षातंत्रों का नहीं भारत के भारतीय नागरिकों का भी कर्तव्य है।

संदर्भ सूची

1. सामुदायिक पुलिस व्यवस्था Drishti IAS. (n.d.). Drishti IAS, https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-analysis/community-policing, Accessed on 15/10/2024.
2. Community Policing | Definition, History & Examples - Lesson | Study.com. (n.d.). study.com. https://study.com/academy/lesson/what-is-community-policing-definition-history-strategies.html, Accessed on 16/10/2024.
3. The origin of the concept of COP. (n.d.), https://www.communitypolicing.eu/the-origin-of-the-concept-of-cop/, Accessed on 16/10/2024.
4. Parihar, K. (2024, August 26) Amit Shah: अब दिखेगा छत्तीसगढ़ में योगी वाला एक्शनए नशे का धंधा किया तो संपत्ति होगी Patrika News, https://www.patrika.com/raipur-news/amit-shah-seize-property-of-drug-peddlers-to-dismantle-network-18940359, Accessed on 16/10/2024.
5. Team, A. U. D. (2023, February 13) Chhattisgarh: सामुदायिक पुलिसिंग से बौखला उठे नक्सलीए समनापुर गांव में पर्चा चस्पा किया, लिखीं ये बातें। Amar uzala, https://www.amarujala.com/chhattisgarh/chhattisgarh-naxalites-agitated-by-community-policing-pasted-pamphlets-in-samnapur-village-2023-02-14?pageId=1, Accessed on 18/10/2024.
6. एजेंस I. (2022, December 26). Chhattisgarh News: छत्तीसगढ़ के नशा विरोधी श्निजात अभियानश् का अमेरिकी IAC अवार्ड में चयनए पहले 30 बेस्ट अभियानों में शामिल। https://www.abplive.com., https://www.abplive.com/states/chhattisgarh/chhattisgarh-news-anti-drug-nijat-abhiyan-selected-in-american-iacp-award-2022-2291524, Accessed on 18/10/2024.

7. Team, A. U. D. (2024, March 29) निजात अभियान के तहत रायपुर पुलिस की ताबड़तोड़ कार्रवाई, आबकारी और एनडीपीएस मामलों में 1,754 आरोपी गिरफ्तार, Amar uzala. https://www.amarujala.com/chhattisgarh/raipur-police-swift-action-under-nijat-campaign-1-754-accused-arrested-in-excise-and-ndps-cases-2024-03-29, Accessed on 19/10/2024.

8. Tnn. (2023, July 4). 'Nijaat' campaign: Bilaspur police nets 2,579 drug peddlers. The Times of India. https://timesofindia.indiatimes.com/city/raipur/nijaat-campaign-bilaspur-police-nets-2579-drug-peddlers/amp_articleshow/101472110.cms, Accessed on 19/10/2024.

9. News18 Hindi (2020, September 14). देश में जब भांग गैर कानूनी नहीं है तो गांजा और है, क्यों? News18 हिंदी, https://hindi.news18.com/news/knowledge/know-why-ganja-or-marijuana-or-weed-is-illegal-when-bhang-or-cannabis-is-not-in-india-bhvs-3237787.html, Accessed on 20/10/2024.

10. 10. Nitrosun 10 tablet: View Uses, side effects, price and substitutes | 1mg. (n.d.). 1mg. https://www.1mg.com/hi/drugs/nitrosun-10-tablet-21302?srsltid=AfmBOoox2i-TULN25VrYE_zhu_z1-24tucYVVtZMj3xQcbmeirL-5wtN&wpsrc=Google+Organic+Search, Accessed on 20/10/2024.

11. Alprazolam oral: Uses, side effects, interactions, pictures, warnings & dosing - WebMD. (n.d.). https://www.webmd.com/drugs/2/drug-8171-7244/alprazolam-oral/alprazolam-oral/details, Accessed on 20/10/2024.

12. Spasmo-Proxyvon Plus capsule: View Uses, side effects, price and substitutes | 1mg. (n.d.). 1mg. https://www.1mg.com/hi/drugs/spasmo-proxyvon-plus-capsule-166801?srsltid=AfmBOoq_ZvwyJwDzGVI0il_I0iQLRmXAnMaWaR0EnQJFgY1oLdg6tJPx&wpsrc=Google+Organic+Search, Accessed on 20/10/2024.

13. NSD Suspension का उपयोगए फायदे एसाइड इफेक्ट, कीमत in Hindi अपोलो फार्मेसी, (n.d.) अपोलो फार्मेसी, https://www.apollopharmacy.in/hi/medicine/nsd-suspension, Accessed on 21/10/2024.

14. 14. Union Home Minister and Minister of Cooperation Shri Amit Shah today virtually inaugurates Zonal Unit Office of NCB in Raipur and also chairs a review meeting on the narcotics scenario in Chhattisgarh. (n.d.). https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2048731, Accessed on 20/10/2024.

15. Asia - Detailed, Create a custom map, MapChart (n.d.) MapChart https://www.mapchart.net/asia-detailed.html, Accessed on 21/10/2024.

16. Kumar, S. (2004) India has widespread drug problem, report says. BMJ, 329(7456), 14.9. https://doi.org/10.1136/bmj.329.7456.14-h, Accessed on 21/10/2024.

****